Journal Global Values, Vol. XV, No. Special Issue 2024, ISSN: (P) 0976-9447, (e) 2454-8391, Impact Factor 8.888(SJIF)
https://doi.org/10.31995/jgv.2024.v15iS1.015

माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों की संवगोत्मक बुद्धिमत्ता के सम्बधं में शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन

प्रताप कुमार सिकदार
शोधार्थी
Email: pssikdar@gmail.com

प्रो० (डॉ०) कोमल यादव
शोध पर्यवेक्षिका
शिक्षा विभाग
एन०आर०ई०सी० कॉलिज, खुर्जा (उ०प्र०)

सारांशः

प्रस्तुत शोध पत्र माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धिमत्ता के सम्बन्ध में शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन के सम्बन्ध में है। यह विषय वर्तमान में एक अत्यन्त ज्वलन्त समस्या के रूप में सामने आ रहा है। संवेगात्मक बुद्धिमत्ता अनेक घटकों के परस्पर अर्न्तसम्बन्धों का प्रतिफल है जिनमें लिंग, विद्यालय का प्रकार, माध्यम, माता–पिता की शैक्षणिक योग्यता तथा क्षेत्र का प्रभाव पड़ता है। सामान्यतः यह समझा जाता है कि व्यक्ति की सफलता एवं उपलब्धियाँ उसकी बुद्धि पर आधारित होती है जिसकी बुद्धि उपलब्धि अधिक होती है उनकी उपलब्धि भी अधिक होती है। अतः विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि निर्धारित करने में संवेगात्मक बुद्धि की महत्वपूर्ण भूमिका होती है।

मुख्य शब्दः

माध्यमिक स्तर, संवेगात्मक बुद्धिमत्ता, शैक्षिक उपलब्धि

Reference to this paper should be made as follows:

प्रताप कुमार सिकदार, प्रो० (डॉ०) कोमल यादव

माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धिमत्ता के सम्बंध में शैक्षिक.....
Vol. XV, Sp. Issue
Article No. 15,
pp. 109-113

Online available at
https://anubooks.com/journal/journal-globalvalues

DOI: https://doi.org/10.31995/jgv.2024.v15iS1.015

प्रस्तावना

शिक्षा जीवन भर चलने वाली प्रक्रिया हैं जिसके द्वारा प्राणी अपने व्यवहार में उत्तरोतर परिवर्तन करता है। प्रत्येक राष्ट्र अपनी आवश्यकताओं आदर्शो व दर्शन के अनुरूप विशिष्ट शैक्षिक व्यवस्था की संरचना करता है जिसका मुख्य उद्देश्य होता है– राष्ट्रीय संस्कृति के अनुरूप व्यक्ति का निर्माण आज के प्रतिस्पर्धात्मक युग ने बालको के सामने अनेक समस्याएँ उत्पन्न की है। प्रतिस्पर्धा में टिके रहना तथा सफलता के लिए व्यक्ति की अपनी संवेगात्मक बुद्धिमत्ता का संतुलन तथा शैक्षिक उपलब्धि होना आवश्यक है। वर्तमान में घर, विद्यालय, चिकित्सालय, सामाजिक एवं सांस्कृतिक मंच, परामर्श एवं निर्देशन सेवायें, औद्योगिक एवं व्यापपारिक प्रतिष्ठान, प्रबंधन क्षेत्र आदि कोई भी ऐसा स्थान नहीं है जहाँ कामकाज की दुनिया में संवेगात्मक बुद्धि के महत्व एवं उपयोगिता को अंगीकृत नहीं किया गया हो।

अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्व

किसी भी अनुसंधान का उद्देश्य अपनी समस्या का समाधान खोजना और संबंधित पूर्व सिद्धांतों की सत्यता को परखना होता है। संबंधित शोध साहित्य के अध्ययन के बिना अनुसंधानकर्त्ता का कार्य अन्धे के तीर के समान होगा। इसके अभाव में उचित दिशा में वह एक पग भी आगे नही बढ़ सकता जब तक उसे ज्ञान न हो कि उस क्षेत्र में कितना कार्य हो चुका है, किस विधि से कार्य किया गया है तथा उसके निष्कर्ष क्या आये हैं, तब तक वह न तो समस्या का निर्धारण कर सकता है और न उसकी रूपरेखा तैयार कर कार्य को संपन्न ही कर सकता है।

शोध समस्या कथन

माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्विमत्ता के सम्बंध में शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन

संवेगात्मक बुद्धिमत्ता

जब व्यक्ति द्वारा अपने जीवन और परिस्थितियों को अपने नियंत्रण में रखने का प्रयास किया जाता है और वह सुख–दुख, भय–क्रोध, ईर्ष्या मोह आदि से प्रभावित नहीं होते वही व्यक्ति संवेगात्मक रूप से बुद्धिमान कहलाता है। वर्तमान शताब्दी में सामाजिक एवं शैक्षणिक परिप्रेक्ष्य में बुद्धि की एक नई अवधारणा विकसित हुई है जो पुराने परम्परागत सिद्धान्तों का स्थान ले रही है। इसे भावात्मक या संवेगात्मक बुद्धि कहा गया है। यह सामान्य बुद्धि से अधिक महत्वपूर्ण है।

शैक्षिक उपलब्धि

शिक्षा के क्षेत्र में जो ज्ञान अर्जित किया जाता है उसे ही शैक्षिक उपलब्धि कहते हैं। हर व्यक्ति जो शिक्षा से जुड़े रहते हैं अपनी शैक्षिक उपलब्धि को जानने की जिज्ञासा रखते हैं। शैक्षिक उपलब्धि अच्छी होने पर कार्य में गुणवत्ता आती है तथा कार्य के प्रति उत्साह बढ़ता है। इसके विपरीत खराब शैक्षिक उपलब्धि होने पर व्यक्ति को कार्य के प्रति हतोत्साहित होना पड़ता है। विद्यालय में विद्यार्थी विभिन्न विषयों का ज्ञान प्राप्त करते हैं। कक्षा के सभी विद्यार्थियों का

ज्ञान तथा ज्ञानार्जन करने की सीमा या प्रगति एक समान नहीं होती है। किसी कक्षा विशेष में विद्यार्थियों ने इतनी मात्रा में ज्ञानार्जन या प्रगति की है उसका मूल्यांकन करना आवश्यक होता है। इसकी जांच जिस परीक्षण द्वारा की जाती है उसे ही उपलब्धि परीक्षा कहते हैं। विद्यार्थी का अंकपत्र ही उसकी शैक्षिक उपलब्धि को प्रदर्शित करता है।

शोध अध्ययन के उद्देश्य

प्रत्येक व्यक्ति जिस किसी कार्य को करता है उसका कुछ न कुछ उद्देश्य निहित होता है। उद्देश्य के बिना वह कुछ भी कार्य नहीं करता है। प्रस्तुत शोध प्रबन्ध के मुख्य उद्देश्य निम्नलिखित हैं –

1. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धिमत्ता एवं शैक्षिक उपलब्धि में संबंध का अध्ययन

शोध अध्ययन की परिकल्पनायें

प्रस्तुत शोध प्रबन्ध में शोध अध्ययन को संपादित करने हेतु निम्न परिकल्पना का निर्माण किया गया –

1. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धिमत्ता एवं शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अन्तर नहीं है।

शोध अध्ययन विधि

प्रस्तुत शोध अध्ययन की प्रकृति को ध्यान में रखते हुए "वर्णनात्मक अनुसंधान" की सर्वेक्षण विधि का प्रयोग करना उचित प्रतीत होता है इसलिए शोधकर्त्ता द्वारा सर्वेक्षण विधि का प्रयोग प्रस्तुत शोध अध्ययन में किया गया है।

शोध अध्ययन की जनसंख्या

प्रस्तुत शोध अध्ययन में जनपद बिजनौर के माध्यमिक स्तर में अध्ययनरत् विभिन्न विद्यालयों में सम्मिलित होने वाले विद्यार्थियों का चयन किया गया है।

शोध अध्ययन की न्यादर्श

प्रस्तुत शोध अध्ययन में जनपद बिजनौर के माध्यमिक स्तर में अध्ययनरत् विभिन्न विद्यालयों के 600 विद्याथियों (300 शहरी तथा 300 ग्रामीण) का चयन किया गया है।

शोध अध्ययन में प्रयुक्त उपकरण

प्रस्तुत शोधकार्य में शोधकर्त्ता ने उद्देश्यों के अनुरूप उपकरणों की खोज की, अतः शोधकर्त्ता ने शोध पर्यवेक्षिका एवं शोध क्षेत्र के अन्य अनुभवी विद्वानों से सम्पर्क किया तथा उनके परामर्श से मानकीकृत उपकरण डॉ. एस.के. मंगल एवं श्रीमती शुभ्रा मंगल द्वारा निर्मित इमोशनल इंटेलीजेंट इन्वेंट्री का प्रयोग किया गया है।

अध्ययन का परिसीमांकन

प्रस्तुत शोध अध्ययन केवल जनपद बिजनौर में स्थित माध्यमिक स्तर के विद्यालयों तक ही सीमित है।

आंकडों का विश्लेषण एवं व्याख्या

परिकल्पना परिक्षण

1 माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धिमत्ता एवं शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अन्तर नहीं है। इस सम्बन्ध में परिगणित मूल्यों को तालिका संख्या 1.0 में प्रस्तुत किया गया है

तालिका संख्या .1.0

न्यादर्ष	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	क्रान्तिक अनुपात	मानक त्रुटि	सार्थकता स्तर (0.5)
शहरी विद्यार्थी	225	20.36	8.73	-0.49	0.8	सार्थक अन्तर नही है।
ग्रामीण विद्यार्थी	280	20.76	9.22			

आँकड़ों की गणना करने से स्पश्ट होता है कि शहरी विद्यार्थियों के संवेगात्मक बुद्धिमत्ता का मध्यमान अंक 20.36 और मानक विचलन 8.73 है तथा ग्रामीण विद्यार्थियों के संवेगात्मक बुद्धिमत्ता का मध्यमान अंक 20.76 एवं मानक विचलन 9.22 है। गणना से प्राप्त क्रान्तिक '' -0.49 है जो कि सार्थकता स्तर 0.05 पर सार्थक नहीं है।

शोधकार्य से पूर्व बनाई गई शून्य परिकल्पना ''ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों के विद्यार्थियों में संवेगात्मक बुद्धिमत्ता की मात्रा में कोई सार्थक अन्तर नहीं है। स्वीकृत की जाती है। अतः यह स्पष्ट हो जाता है कि ग्रामीण क्षेत्रों के विद्यार्थियों के संवेगात्मक बुद्धिमत्ता एवं शहरी क्षेत्रों के विद्यार्थियों में संवेगात्मक बुद्धिमत्ता की मात्रा में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

ग्राफ

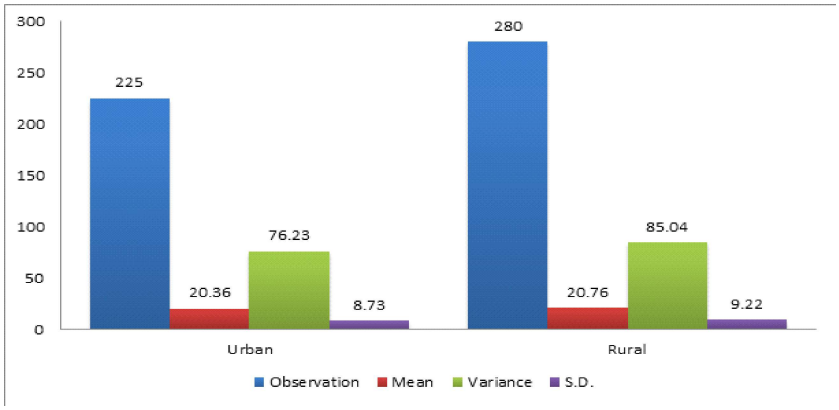

अध्ययन का निष्कर्ष

मध्यमानों का निरीक्षण करने से यह स्पष्ट होता है कि ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थियों का मध्यमान और मानक विचलन शहरी क्षेत्र के विद्यार्थियों के मध्यमान और मानक विचलन से अधिक है। इससे स्पष्ट है कि ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थियों में शहरी क्षेत्र के विद्यार्थियों की अपेक्षा अधिक संवेगात्मक बुद्धिमत्ता पाया गया।

सन्दर्भः

1. अरोड़ा, रीता (2005);''शिक्षा में नव चिन्तन'', जयपुरः शिक्षा प्रकाशन।
2. अग्निहोत्री, रविन्द्र (2007);''आधुनिक भारतीय शिक्षा समस्याऐं एवं समाधान'', जयपुरः राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी।
3. भट्टाचार्य, जी0सी0 (2005);''अध्यापक शिक्षा'', आगराः विनोद पुस्तक मन्दिर।
4. दुबे, श्यामाचरण (2005);''भारतीय समाज'', दिल्लीः नेशनल बुक ट्रस्ट इण्डिया, पृष्ठ–126।
5. लाल एवं पलोड़ (2007);''शैक्षिक चिन्तन एवं प्रयोग'', मेरठः आर0लाल बुक डिपा।
6. प्रसाद, देवी (2001);''शिक्षा का वाहनः कला'', दिल्लीः नेशनल बुक ट्रस्ट इण्डिया, पृष्ठ–68,।
7. पाण्डेय, राम शुक्ल (2007);''शैक्षिक नियोजन एवं वित्त प्रबन्धन'', आगराः विनोद पुस्तक मन्दिर, पृष्ठ–105, 115, 116, 124।
8. शर्मा, रजनी एवं पाण्डेय, एस0पी0 (2005);''शिक्षा एवं भारतीय समाज'', जयपुरः शिक्षा प्रकाशन, पृष्ठ 128–129।
9. सुखिया, एस0पी0 (2005);''विद्यालय प्रशासन एवं संगठन'', मेरठः आर0लाल बुक डिपो।
10. अन्वेषिका, एन0सी0टी0ई0, नई दिल्ली।
11. ''भारत की जनसंख्या'', उपकार प्रकाशन, आगरा–2.
12. भारतीय शिक्षा शोध पत्रिका, विद्या भारती, लखनऊ (उ0प्र0)
13. गिजुभाई बोधका –शिक्षक हों तो, पष0 36
14. राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग, वार्षिक रिर्पोट नई दिल्ली– 1996–97
15. शिक्षा चिन्तन, त्रिमूर्ति संस्थान, कानपुर (उ0प्र0)

''उत्तर–प्रदेश एक अध्ययन (शिक्षा के सन्दर्भ में) साहित्य भवन पब्लिकशन्स'',अ